वेदांत

3081

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ~~४३४/वे ४९(~~

ग्रंथ नाम गुरुगीता

विषय म. वेदांत)

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

गुरुगीता

मराठी

दासकृत गुरुगीता

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(1)

जे अंनपानआपण ।। नोंचवडोवि[illegible]मोन ।। जे जें यथाक्रमें ।। २१ ।।
गुरुमूहूर्ती[illegible]ध्यानें ।। करावें स्तोत्र पठण ।। गुरुचे निवास
स्थान ।। ते थें बिराहावें ।। का[illegible]ी ।। २२ ।। चरणिंचें जे जळ ।। ते
भागिरथी निर्मळ ।। गुरुतो[illegible]चे केवळ ।। ज्योतिर्लिंग ।। २३ ।। गु
रुचरणि मस्त ।। ठावि जेड[illegible]हि अक्षई वट ।। प्रयाग तीर्थराज ।।
तो चि गहन मार्गि ।। २४ ।। गुरुमूर्तिचे स्मरण ।। निरंतर ध्या
नें तचि ।। गुरुआज्ञेचे पालण ।। अनन्यथा वक्रावें ।। २५ ।।
स१ गुरुमुखिं चेब्र[illegible] ।। [illegible]पाव अनयासे [illegible]वि भी चारिंचे चि

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(2)

मु·गी तैसें ॥ परपुरूषालागीं ॥ २६ ॥ तैसीचि आवडि धरिनां ॥

४ मातूंपिजातिकुलो चिंता ॥ किर्ति: पुष्टिचिंता ॥ आठावगु

गुरूविण ॥ २७ ॥ अनन्यभावरूपिनां भजन ॥ नेमाझेपर

निरंतर मीं जाण ॥ नपावसु होये ॥ तेरायपनाहि आवता

॥ २८ ॥ पावेनीनुष्टि देवणी ॥ गुरु भजामननभाषतें ॥ गु

वि रूमुरिवें घाजाण ॥ प्रसारेचि घावि ॥ २९ ॥ त्रैलोकिथोर कृष्ण ४

थोर ॥ देवपंनागअसुर ॥ रूषिमानविविघाधर ॥ गुरुप्र

सादेंपावले ॥ ३० ॥

(2A)

गुकारजे अक्षन ॥ ते मायागुणसाकार ॥ रुकार ते ब्रह्माक्षर ॥
मायानाशक ॥ ३१ ॥ ऐसेंगुरुचे स्त्रे ष्टपद ॥ देवांसि कथें नाहिं प्रा
स ॥ हाहाहूहूगंधर्वश्रेष्ट ॥ तेपजेक्षि धांवती ॥ ३२ ॥ निश्चय
निरूपेनाण ॥ समास्तांपूज्यजेंपद ॥ गुरूवेगळेनत्व ॥ नाहि
त्रिपुरी ॥ ३३ ॥ आसनशय्या आणि वाहन ॥ वस्त्र अलंकार भूष
ण ॥ करावें निवेदन सा[illegible] ॥ जेणें गुरुसंतोसे ॥ ३४ ॥ तेणे
पुलें जैसे चित्र ॥ किं सकल तारा साहित ॥ देह प्राण [illegible] ॥
करावें निवेदन ॥ ३५ ॥ शरीरहाहि चारिनां ॥ क्रिमिकीटदु
र्गंधिता ॥

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

(2)

मु.गी तत्र असें ॥ पर पुरूषालागीं ॥ २६ ॥ तैसीचि आवडि धरिनां ॥

४ मातूं भिजाति कूलो चिंता ॥ किर्लि: पुष्टि चिंता ॥ आठावे गु

गुरू विण ॥ २० ॥ अनन्ये भावे करितां भजन ॥ तें मासे पं

निरंजनीं जाण ॥ न पावे [illegible] होये ॥ ते रायनाहि जाणा ॥

२८ ॥ पावे तीनु लि रेवे कणी ॥ गुरू भजा मननाभा पलें ॥ गु कृस

वि रू मुखिं घाजाण ॥ प्रसारे विद्यावि ॥ २९ ॥ त्रैलोकि थोर ४

थोर ॥ देव पंनग असुरा ॥ रूसमान विद्याधर ॥ गुरूप्र

सादें पावले ॥ ३० ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(2A)

गुकारजे अक्षर ॥ ते मायागुणासाकार ॥ तकारतें ब्रह्माक्षर ॥
मायानासक ॥ ३ ॥ ऐसेंगुरुचे स्त्रे ष्टपद ॥ देवांसि कष्टें नाहिं प्रा
स ॥ हाहाहूहूगंधर्वश्रेष्ट ॥ तेपुजेसि धांवती ॥ २ ॥ निश्चय
निरुतेनाणे ॥ समास्तांपूज्यप्पद ॥ गुरूवेगलेन त्वन ॥ नाहिं
त्रिपुरी ॥ ३ ॥ आसनशयनआणि वाहन ॥ वस्त्र अलंकार भूष
ण ॥ करावें निवेदनसाध्यक ॥ जेणेंगुरुसंतोसे ॥ ४ ॥ तेथ
मुलेंजैसे चित्त ॥ किंसकलसारासहित ॥ देहप्राणादि समर्प ॥
करावें निवेदन ॥ ५ ॥ सरीरहें विचारितां ॥ कृमिकीटदुर्
गंधिता ॥

गु॰ मलमूत्रश्लेष्मरक्ता ॥ नाहि पार ॥३६॥ अस्तिमांसांचा गोळा ॥
५ आदवितां वाटे कंटाळा ॥ गुरुभजनिं साथेक ॥ जाहाला तरिच
(३) बरवा ॥३७॥ सांडूनि लाज लोकांचि ॥ नमस्कारिजे दीर्घदंडेसि ॥
कायावाचामनेंसि ॥ येकचि निष्टा असावि ॥३८॥ संसारवृक्षिं वेध
लें ॥ पतनाभिं जेसे मुंगले ॥ नरकापासुनि रक्षिले ॥ सद्गुरुरूप
ह्मुवें ॥३९॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर ॥ हा गुरुचे वो अवतार ॥ तो सर्वत्र गी॰
चराचर ॥ परब्रह्म तो सद्गुरु ॥४०॥ आज्ञानें नेत्र झांकले ॥ ज्ञान ५
शलाकेनें उघडिले ॥ तया सद्गुरुचे पाउले ॥ वंदिलें मी माथां ॥४१॥

(3A)

व्योमा ऐसे अखंड ॥ मंडलाकार निबिड ॥ व्यापुनि सकल ब्रं
ह्मांड ॥ भरलें असे ॥ ४२ ॥ सकल श्रुतिचे रत्न भुषण ॥ पद
कमल जाण ॥ वेदांत अंबुज रविलण ॥ सूर्योदया ऐसा ॥ ४३ ॥
तया माझें नमन ॥ अंतरि तयाचें स्मरण ॥ उपजे ज्ञान लागो
न ॥ विवेकासी हित ॥ ४४ ॥ चैतन्य शुद्ध शांत ॥ पूर्ण निरंजन व्यो
मातित ॥ नाद बिंदु कलारहित ॥ अगोचर जें ॥ ४५ ॥ स्थावर
जंगम चराचर ॥ व्योमातीत निराकार ॥ नमन माझें निरंतर
तया श्री सद्गुरु तें ॥ ४६ ॥ ज्ञानशक्ति आरूढला ॥ तत्वविश्व र
चोनि शोभला ॥

गु० ६ (५)

ब्रंह्ममानिगागनमाला ॥ शेो भातनया ॥ ४७ ॥ भुक्तिमुक्तिचाद
ता । अनेककुकर्मछेदिता ॥ शिवज्ञानप्रकासिता । तारिस्वये
॥ ४८ ॥ भवसिंधूचेशोषण ॥ कीं तैसंदीपन ॥ तीर्थाचेंमूर्ति
मान ॥ भक्ततोचिजाणे ॥ ४९ ॥ गुरु होउनिआणिक ॥ तत्वनसे
तारक ॥ अनुष्टानतपादिक ॥ सद्गुरु सर्वहि ॥ ५० ॥ जोमाझ
स्वामिगुरुनाथ ॥ तोसर्वांनं व्यापजग ॥ सर्वात्माविश्वनाथ ॥
सद्गुरुचिसर्व ॥ ५१ ॥ ध्यानमूलगुरुमूर्ति ॥ पूजामूलगुरुचरण ॥
मंत्रमूलगुरुवाक्य ॥ मोक्षमूलगुरुरूपा ॥ ५२ ॥ गुरु तोचिआदि
अनादि ॥

गी० ६

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(4A)

गुरूतोचिदेवासत्य ॥ गुरूतोचिरिद्धिसिद्धि ॥ जपतपज्ञाप्यतोचिगु
रू ॥ ५३ ॥ ब्रह्मांडिंतिर्थे असति ॥ तिसत्पसागरी मिळति ॥ तिहिं
सरनपवति ॥ गुरूचरणकणा तुल्य ॥ ५४ ॥ सहस्त्राराधे करून ॥ स
कळतीर्थेनपवति ज्ञाण ॥ ब्रह्मा विष्णु आणि ईशान ॥ सर्वहि ज्ञे
जे ॥ ५५ ॥ सद्गुरूसर्वहि असे ॥ जगदाकार तोचि दिसे ॥ म्हणो
नि अखिलमानसें ॥ सद्गुरु चि भजावा ॥ ५६ ॥ ज्ञानविज्ञानरसी
त ॥ गुरूभजनी प्राप्त होत ॥ तो निःशद्धि गर्जत ॥ श्रुतिस्वयेस
द्गुरू ॥ ५७ ॥ गुरूकृपाप्रसादें ॥ देवगंधर्वपितृगण ॥ यक्षसिद्ध
चारण ॥ किन्नरादिक ॥ ५८ ॥ सर्वहि आपुल्याठायीं ॥ गुरूप्रसा
दें विजयी ॥

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गु.गी० परिभक्तिचेलक्षण॥ ठावुकेंनरसे॥५९॥ अहंकारेगर्वेंकरून॥
६ विद्याबलतपज्ञान॥ संसारकुहरिंआगमन॥ घटियंत्रन्यायें
॥६०॥ गंधर्वहिवपितर॥ सिद्धचारणयक्षयेंकिंन्नर॥ सुटकानप
वतिनर॥ भजनालागीं॥ [illegible]॥ गुरुसेवाजेनेपावति॥ म्हणो॥
(5) नि[illegible]चयानायाचि॥ असो आतांपार्वती॥ गुरूध्यानऐकपां॥६२॥
२ जेऐकतांगुरुध्यान॥ परमानंदपावेमन॥ संसारदुःखगहन॥ कुम०
नासिसर्वथा॥६३॥ भुक्तिमुक्तिचेकारण॥ सकलसुखाचें
निधान॥ श्रवणमात्रेंपावन॥ करिताकडेचि॥६४॥ श्रीसंतगु
रुचिबोलणें॥ ब्रह्महत्याविभंजन॥ तयाचेंचिस्मरण॥ नसोडिसर्वथा॥६५॥

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and ... Chhatrapati Pratishthan, Mumbai

(5A)

ब्रह्मानंदमूर्ती ॥ परमसुखाचि प्राप्ती ॥ सुखदुःखाचि हो
ति ॥ गगनोपमो ॥ ६६ ॥ तत्वमस्यादि लक्षणां ॥ स्वताजिं कालक्ष
णं ॥ एकनिस्यपरोक्षे ॥ नारिसे कवणा ॥ ६७ ॥ गुणरहित अच
ल अमल ॥ सर्वभूति साक्षभरौ ॥ भावाभाव विगत ॥ नम
न तया ॥ ६८ ॥ हृदयकमला भीतरी ॥ पांकोलिका उपरी ॥ मध्ये
सिंहासनावरी ॥ दीव्यमूर्ती ॥ ६९ ॥ शुद्धचंद्राचि कला ॥ पुरुते के
हस्तांशो भला ॥ वरदायका चोलिला ॥ पाहावाजे सा ॥ ७० ॥
निसशुद्ध निरंजन ॥ निराभासविकाररहित ॥ निसबोधघन ॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

न.

गु० गी० ५ (६)

गु

गुरुदेवपैसा ॥७१॥ शुभ्रवस्त्रपांगुरला ॥ श्वेतपुष्पस्त्रक्‌माला ॥
उपमानसेनेत्रकमला ॥ वामांगिं निजशक्ति ॥७२॥ आनंदकर
दर्शनें ॥ ज्ञानस्वरूपप्रसन्न ॥ बोधरूपावन ॥ कृपासिंधु की ५
॥७३॥ योगिराजविति अया ॥ ऋद्धिसिद्धि मिळति आपीलया ॥ नित्य
हा नुग्र होतें ॥७४॥ ऐसा पंचविध कर्ता ॥ द्वादशी श्वेतक
मल धर्ता ॥ नामपूर्वक स्मरता ॥ प्रातःकाळीं ॥७५॥ गुरुहु कृ
नि अधिक ॥ त्रिवाचा नसे आणिक ॥ सिवाहि आज्ञाधारक ॥ ५
हि विठपदरसिं ॥७६॥ हेचि कल्याणकारण ॥ त्रिवाचामासिरासासन ॥

समग्रओ ॥७४॥

(6A)

ऐसें करितां भजन ॥ ज्ञान उपजे स्वयें ॥ ७७ ॥ मग [illegible]ु कि हे भा
वना ॥ शिष्यें कराविमना ॥ द्दाविला मार्गे अंतःकरणा ॥ शुद्ध
करावें ॥ ७८ ॥ अनिसत्पर्वनिरसावें ॥ सत्स्वयें होवें ॥ ज्ञा
न ज्ञेयें स्वभावें ॥ समरसता केली ॥ ७९ ॥ ऐसें असतां पावती ॥
गुरु निंदा जे करिति ॥ ते घोर नरकि पावति ॥ यावच्चंद्रसूर्य ॥ ८० ॥
जंव रि देहिं वर्त्ते ॥ तंव रि गुरु भजनासमर्थ ॥ गुरुचालोपभक्ते ॥
न करिति जन ॥ ८१ ॥ [illegible] स्वच्छंद जरि जाहाला ॥ गुरु विघात पाला ॥
हुंकारें बोले संमुख ॥ उद्घटन बोलावें ॥ ८२ ॥ असें सबोल गुरुसीं ॥

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

स्वा।गी० ॐकार ये वादासि ॥ गुरु तेंगो विपरीयेसि ॥ जाणिव वलें ॥ ८३ ॥ निर
१० अंतर्देशिं तो गुरु ॥ बहु काल हो येबं स्मरा राक्षस ॥ विद्या पावेत
(७) म स ॥ नाना यो निप्रति जाये ॥ ८४ ॥ मुनि चात्राप जाहाला ॥ देवि
पत्न भिंत्रासिला ॥ गुरुरक्षी त पाला ॥ कालम्र स्कु पासुनि ॥ ८५ ॥
गुरु जो रामं त्र स्मरण ॥ वेदवाक्य सिमान ॥ केवळ जं गुरु भजन ॥ स्म ऌ
तिस्मृति आगलें ॥ ८६ ॥ आणि गुरुने जो रापिला ॥ कोणहि
न रक्षिन पाला ॥ ईश्वर हि स्त्रम पावला ॥ अरु रूयेथें ॥ ८७ ॥ नै कृ०
चि ज्ञाण संन्यासि ॥ विनट लागु रुदासि ॥ इतर भिरविवेशारि १०
ति लक्षणा वियोगी ॥ ८८ ॥ जैसे सर्व निराकारा ॥ परब्रह्म केवळ ॥

Joint project of The Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(२A)

तोचि गुरु साकार ॥ देहमानावें ॥ ९ ॥ गुरुरूपें नें आत्माराम ॥ ला
भ होय परम ॥ आत्मज्ञानाचा आगम ॥ सद्गुरुरूपा ॥ १० ॥ ब्रह्माप
रत्न निर्गुण ॥ जीव जैं जें अनुप्रमाण ॥ स्थावरजंगम भान ॥ तोगु
रुचि सर्व ॥ ११ ॥ सच्चिदानंद दीप्त ॥ निर्गुण निरंजन निस्सं ॥ परात्प
र तोचि समर्थ ॥ नमो तयास [illegible] ॥ १२ ॥ हृदयाकाशीं निर्मल ॥ स्फ
टिकाऐसें सोज्वल ॥ चिद्रूप [illegible] कवल ॥ झलफलित ॥ १३ ॥ अंगु
ष्टमात्र प्रमाण ॥ हृदयीं करावें ध्यान ॥ चिन्मय तेजस्फुरण ॥ गुरु
रूप ॥ १४ ॥ मग सांडूनि तें स्फुरण ॥ निर्विकल्प करावें मन ॥ अगा

Joint project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गु॰गी॰

१०

(४)

चरनिरंजन॥ ध्यावें तेंचि॥५॥ निजस्वभावें कर्पुर॥ किं कुंकुम
रंगसार॥ सीतो [illegible]हो उनिपर॥ तें ब्रह्म जाणें॥६॥ आपण तैसें हो
वावें। पत्रकुत्राचि असावें॥ भृंगी कीट न्यायें॥ ध्यावें रुपं गुरुचें॥
॥७॥ गुरुध्यान जाणिजे यें॥ स्मरतां तैसें आहे॥ पिंडरुपें पाहे हो
यि॥ संशय नाहिं॥८॥ स्वरुप तें होउनि॥ तैसें पावावें आप
णा॥ निराळें जैसें गगना॥ सर्वव्यापें॥९॥ येकापेक्षिं हांत॥ निर्वा
सना संगरहित॥ यथालाभें संतुष्ट॥ असावें ऐसें शिष्य॥१०॥ कृ॰ १०
स्वल्प अथवा बहुत॥ यथान्यायें स्वस्त चित्त॥ निःकामें आनंदभरित॥
सर्वदां पें॥११

(8A)

ऐसंसी मुक्तो विलक्षणें। म्याउपदेशिलिं तुज काणे। उपदेश
मार्गयेणें। गुरु ध्यानादिक।।२।। ऐसा गुरुचा दास। सर्वेचउदा
स।। वरा वाते पुण्य देस।। जैनांस वे।।३।। ऐणे उपदेशे पा
वीति।। लो कोपकारानिश्चिति।। ज्ञानें कर्मे तराति।। कुउति अ
ज्ञान।।४।। ऐसे हे पुण्याख्यान।। जे पउति करिति श्रवण।। लि
हुनि देति दान।। ब्राह्मणासि।।५।। तयासकल दानाचें घडे फ
ल।। भवव्याधि होतिनिर्मुल।। मंत्रराज केवल।। सारिनपवीतिपरम।।६।।

गुरुगी० अंनतफलयाचें॥ सर्वपापहरेसाचें। नानाकमहाविघ्नाचें।
११ बाधितहोपा॥७॥ अकालमृत्युहरण॥ सर्वकष्टनिवारण॥
भूतादिभयनिवारण॥ व्याघ्रचोरादिक॥८॥ महाव्या
(१) धिनासना॥ राजेश्वर्यवश्यहोति॥ मन्त्रनिलाविनिविश्रुत
॥ नासतिशत्रु॥९॥ कूरासीनिदुर्वासिनि॥ अथवाशुभ्र
कंबलिं॥ निःकामहेवोभवानि॥ गीताजपकिजे॥१०॥ औरि
ष्टनिवारणआसन॥ शत्रुनिवारणकृष्णासन॥ धनकामि
पीतवर्णी॥ ऐसाआसनिजपावें॥११॥ उत्तरामुखवसकष्टनिरीन॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(९A)

पूर्वीमुखवशीकरण ॥ दक्षिणामुखमारण ॥ धनसाध्य ॥ १२ ॥
पश्चिमे मोहन कर्म ॥ कारागृह चे तुटे बंधन ॥ देवादिक सकल
जन ॥ वश्य होति ॥ १३ ॥ वाढा चें मुख बंधन ॥ सर्व कार्य सिद्धि
जाण ॥ रुग्णा चे विव धन ॥ नाशक दुष्ट कर्मो ॥ १४ ॥ दुष्ट ग्र
निवारि ॥ दुष्टस्वप्न निवारि ॥ सो भाग्य होयेना ॥ अचल ॥ भावे
जपतां पै ॥ १५ ॥ आरोग्यकर आयुष्य करे ॥ पुत्र नातु वृद्धि कर
निःकामें मोक्ष करा ॥ होय भक्त ॥ १६ ॥ वंधे पुत्र होय ॥ कामिका
चे मनोरथ पुरति ॥ चिंतामणि रूप भाते ॥ निश्चये जाण ॥ १७ ॥

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai "Joint project of the

गुरु० पा भुक्तिमुक्तिदायक ।। सकामपूर्णदायक ।। शिवविष्णु मंत्र ।। सौ
१२ रगणेशादि ।। १८ ।। सकल हे हि गीता ।। फलपाविजे जे विजण ।।
स्थानिं सांगो वो आतां ।। प[illegible] त्यांचे ।। १९ ।। सागरिं सरिता
(१०) तीर्थीं ।। हरिहराचे [illegible] गोठणि अथवा माठिं ।। हि
सिद्धि स्थानें ।। २० ।। वड अश्वत्थ आंवलि ।। ये हा वनिं अथ
वा वनिं ।। पवित्र स्थानि अस्ता ।। येकाग्र मनें करूनियां ।। कु
।। २१ ।। हिं निःकामाचि स्थानें ।। आतां सकाम स्थानें सांगेन ।। १२
भयस्थल स्मशानें ।। धत्तूर आंबे तरू ।। २२ ।। मूर्ख असतां नर ।।
जाण ।।

Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(10 A)

हें न पडतो ठाकुरु स्तोत्र ॥ मल्ल तैसा गुरु पुत्र ॥ तो गुरु पद ज्ञाचे॥
॥२३॥ संसार मल नाशन ॥ गीता हें जल आण ॥ पढत याउ
पजे ज्ञान ॥ नाहिं संशयो ॥२४॥ ऐसा मन्त्रराज ॥ तो सैं
पवित्र सहज ॥ दैवरु [illegible] पुज ॥ तये स्थळिं ॥ रसा तो
असतां आसनिं ॥ शयनिं अथवा भोजनिं ॥ अश्वमस्त
आरोहुनी ॥ चालेसुरवां ॥२५॥ सदा मुचि जाणावा ॥ दर्शनें
मोक्षाचे हावा ॥ यां कां मैओणि शिवा ॥ नाहिं भिन्न ॥२६॥ जे
लिंङ्गमिळाले ॥ कि घटमठिं नभ सचिलें ॥ तैसें जिव शिव येक झाले ॥
ल

"Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

भ्रेद्र॰

रु॰गी॰ [illegible]राहत॥२८॥ [illegible]सा जो मुक्त नर॥ भावें भजावा ईश्वर॥ दास्य

२३ सेवादि उपचार॥ करावें प्रयत्नें॥२९॥ तंतोहीं जो वेळें॥ ते सत्य

जाणावें॥ भोग मोक्ष अथिले॥ जिकाग्रिपैं॥३०॥ [illegible] संगीत ये

(११) वें महिमान॥ सरिनपाये ज्ञान॥ धंन्य धंन्य ते जन॥ तो

दे राहि धंन्य॥३१॥ गुरु माता गुरु पिता॥ गुरु देव स्वजन भ्राता॥

कोटि पुण्यें सातो शतां॥ गुरु देवा विपा॥३२॥ विद्यामद धनग छ

र्विता॥ गुरु तें जेन मानित॥ ते यमपुरीचे प्रास॥ जाणावें म

र्व॥३३॥ म्हणोनि चगुरु तो ईश्वर॥ हा [illegible] सस भि र्धार॥ बहु वे २३

तो नास्तीक जाणें ॥ अरवशाने ॥ ४५ ॥ नयाप्रति हे गीता ॥ नुवां न
करावि हे वार्त्ता ॥ मनन करू नितत्वता ॥ न बोलावें यांप्रति ॥ ४६ ॥
जीत ईद्रियें आणि शांत ॥ विरक्त ॥ यांहि अलंकृत ॥ अत्यंत प
क्कचित्त ॥ तोचि उपदेसावा ॥ ४७ ॥ स्कंदें व्यासवाक्ति ॥ शि
वें उपदेशिलें भवानि ॥ तोचि प्रमेय घेरूनि ॥ मराष्ट्र भाषा ॥
॥ ४८ ॥ बोल्ले वेदसार ॥ ऐकोत भक्त ति चतुर ॥ दासखिन विनि
रंतर ॥ सा घ्रुल्नातें ॥ ४९ ॥ ॥ इति श्रीस्कंदपुराणे ॥ उत्तररव

(1A)

the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

गु॰ गी॰
१५
(१२)

ई॥ उमामहेश्वरसंवादे॥ गुरूगीतास्तोत्रंसंपूर्णं॥ ॥श्री॥
॥ ॥छ॥ ॥श्रीगुरुनाथार्पणमस्तु॥ ॥छ॥ ॥श्री॥
छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥छ॥ ॥श्री॥

रूद्रम
१५

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com